Date 14/06/21 Page No.:

विषय- संस्कृत, बी॰ ए॰ स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष- तृतीय पत्र डॉ॰ ओम प्रकाश आर्य
कादम्बरी - शुकनासोपदेश महाराजा कॉलेज, आरा

अंश व्याख्या -

पुरः पताका सर्वविनयानाम् । उत्पत्तिनिम्नगा क्रोधावेगग्राहाणाम् । आपानभूमि विषयमधूनाम् । सङ्गीतशाला भ्रूविकारनाट्यानाम् । आवासदरी दोषाशीविषाणाम् ।

अर्थ-

(पुरः पताका सर्वविनयानाम्) यह लक्ष्मी सब अविनयों की अग्र-पताका है। (उत्पत्ति निम्नगा क्रोधावेगग्राहाणाम्) क्रोधावेगरूपी ग्राहों की उत्पत्ति के लिए नदी है। ~~विषयरूपी मदिराओं~~ (आपानभूमिः विषयमधूनाम्) विषयरूपी मदिराओं की पानभूमि है। (सङ्गीतशाला भ्रूविकारनाट्यानाम्) भ्रूविकाररूपी नाट्यों की संगीतशाला है। (आवासदरी दोषाशी-विषाणाम्) दोषरूपी सर्पों की निवास-गुफा है।

टिप्पणी -

जिस प्रकार अग्रपताका ~~की~~ के दीखने से उसके पीछे आनेवाली सेना का अनुमान सहज हो जाता है उसी प्रकार किसी व्यक्ति के पास लक्ष्मी के आते ही उसके पीछे-पीछे अनिवार्य-रूप से आने वाले सभी प्रकार के अविनय व दुराचारों का भी अनुमान हो जाता है। लक्ष्मी और पुरःपताका के इस साम्य अतिशय को द्योतित करने के लिए ही कवि ने लक्ष्मी में पुरः पताका का आरोप कर दिया। इस प्रकार यहाँ 'रूपक' अलंकार है।

"You have to take the calculated risk, to earn something." - Dhirubhai Ambani

IND CamScanner App

Date / / Page No.

जिस प्रकार नदी में ग्राह उत्पन्न हो जाते हैं उसी प्रकार लक्ष्मी की विद्यमानता में क्रोध का आवेग उत्पन्न होता है, अतः क्रोध आवेग में ग्राह का आरोप उचित ही है जो कि लक्ष्मी में नदी के आरोप का कारण है। इस प्रकार यहाँ 'परम्परित-रूपक' अलंकार है।

जिस प्रकार मदिरालय में खूब मदिरा उड़ाई जाती है और पीने वाले को तबाह कर देती है उसी प्रकार लक्ष्मी के आने पर व्यक्ति विषय-भोगों का खूब उपभोग करता है और अपना सर्वनाश ही कर बैठता है। अतः विषयों में मद्य का आरोप किया गया है जो कि लक्ष्मी में आपान-भूमि के आरोप का निमित्त बना है। इस प्रकार यहाँ 'परम्परित रूपक' अलंकार है।

जिस प्रकार रङ्गशाला में अभिनय होता है उसी प्रकार लक्ष्मीवान् मनुष्य में क्रोध आदि वृत्तियों से भ्रूवि-कार रूपी अभिनय देखने को मिलता है। अर्थात् लक्ष्मी मिल जाने पर व्यक्ति भौंहें बहुत चढ़ाने लगता है। इस प्रकार यहाँ विकार में नाट्य व अभिनय का आरोप किया गया है ~~क्योंकि~~ जो कि लक्ष्मी में सङ्गीतशाला के आरोप का निमित्त है। अतः यहाँ 'परम्परित रूपक' अलंकार है।

काम आदि दोष प्राणनाशक होने से विषधररूप ही हैं। सर्प यथा बिल में रहते हैं उसी प्रकार कामादि दोष भी लक्ष्मी में वास करते हैं। कामादि दोषों में आशीविष अर्थात् विषैले साँप का आरोप लक्ष्मी में आवासदरी व निवास गुफा का कारण है, अतः यहाँ 'परम्परितरूपक' अलंकार है।

पदव्याख्या -

सर्वाविनयानाम् = सर्वे च ते अविनयाः (क॰धा॰) तेषाम्। उत्पत्तिनिम्नगा = निम्नं गच्छति इति निम्नगा (निम्न+गम्+टाप्) उत्पत्तेः निम्नगा (ष॰ तत्पु॰)। क्रोधावेगग्राहाणाम् = क्रोधस्य आवेगाः क्रोधावेगाः (ष॰ तत्पु॰) ते एव ग्राहाः क्रोधावेगग्राहाः (क॰धा॰) तेषाम्। आपानभूमिः = आपानाय भूमिः (चतुर्थी तत्पु॰), आपानम् - आपीयते सम्भूय पीयते सुरा यत्र तत् (आ+पा+ल्युट् अधिकरणे)। विषयमधूनाम् = विषया एव मधूनि विषयमधूनि (क॰धा॰) तेषाम्। भ्रूविकारनाट्यानाम् = भ्रुवोः विकाराः भ्रूविकाराः (षष्ठीतत्पु॰) ते एव नाट्यानि (क॰ धा॰) तेषाम्। आवासदरी = आवासाय दरी (चतुर्थी तत्पु॰)। दोषाशीविषाणाम् = आश्यां दंष्ट्रायां विषं येषां ते आशीविषाः सर्पाः (बहुव्रीहि) दोषा एव आशीविषाः दोषाशीविषाः (क॰धा॰) तेषाम्॥ इति॥

IND CamScanner App